IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जयपुर के शहरी एवं ग्रामीण उच्च माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के मूल्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रंजना पारीक
शोधार्थी
शिक्षा विभाग,
महाराज विनायक ग्लोबल यूनिवर्सिटी,
जयपुर (राजस्थान)

प्रस्तावना

मूल्य वह सत्य है जिसके लिए व्यक्ति जीता है और आवश्यकता पड़ने पर वह संघर्ष करने, दुःख सहने तथा मृत्यु को भी स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता है। मूल्य ऐसी आचरण संहिता या सद्गुण है, जिससे व्यक्ति अपने निश्चित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु अपनी जीवन पद्धति का निर्माण करता है तथा अपने व्यक्तित्व का विकास करता है। प्रस्तुत शोधपत्र में जयपुर के शहरी एवं ग्रामीण उच्च माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत शोधकार्य सर्वेक्षण विधि पर आधारित है। इस हेतु शोधकर्त्ता ने जयपुर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभिन्न संकाय से 800 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया। विद्यार्थियों के मूल्यों के मापन हेतु शोधकर्त्ता ने डॉ. आर.के. ओझा द्वारा निर्मित मूल्य अध्ययन मापनी का उपकरण के रूप में प्रयोग किया एवं निष्कर्ष स्वरूप पाया कि जयपुर में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभिन्न संकाय के उच्च माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया है जबकि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के सैद्धांतिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

मुख्य बिन्दु – मूल्य, उच्च माध्यमिक स्कूल विद्यार्थी

भूमिका

प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्ति का इच्छुक होता है। मनोविज्ञान में सफलता प्राप्ति हेतु महत्वपूर्ण साधन जो व्यक्ति के पास होने चाहिए वह हैं, मूल्य। मूल्य व्यक्ति की प्रतिदिन की जिंदगी को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। मूल्य प्रत्येक संस्कृति, देश व मानव प्रजाति में पाये जाते हैं। इसके बावजूद कुछ लोग सफल होते हैं कुछ असफल। सफलता, असफलता का निर्धारण उत्पादकता, गुणवत्ता, इत्यादि के आधार पर किया जाता है चाहे वह शैक्षिक क्षेत्र हो, आर्थिक क्षेत्र हो, कार्मिक क्षेत्र हो या प्रबंध क्षेत्र।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता वृद्धि के साथ साथ जीवन के कठिन क्षणों को प्रबंधित करने एवं प्रोत्साहित करने की हमारी क्षमता अर्थात् संवेगात्मक बुद्धि पर भी निर्भर करती है। उचित मूल्य विकास द्वारा हमारी सफलता की औचित्यता का निर्धारण होता है अर्थात् मूल्य हमें नैतिकता, अनैतिकता, उचित–अनुचित, सत्य–असत्य इत्यादि के मध्य के अंतर का ज्ञान कराते हैं। मूल्यों के सकारात्मक विकास का प्रभाव प्रत्येक क्षेत्र में सकारात्मक पड़ता है। व्यक्ति अपनी सकारात्मक ऊर्जा का प्रयोग करते हुये प्रत्येक क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट निष्पादन देता है परिणामतः उत्पादकता बढ़ती है और सामाजिक संबंधों के निर्वहन की क्षमता में भी वृद्धि होती है।

व्यक्ति में विकसित मूल्यों की मात्रा उनको बाल्यकाल में दिये गये प्रशिक्षण और उनके द्वारा ग्रहण किये गये ज्ञान के आधार पर भिन्न–भिन्न होती है, प्राचीनकाल से ही यह अवधारणा रही है कि बालक की प्रथम पाठशाला परिवार है। परिवार में ही बालक मूल्यों की महत्ता को सीखता है, जिसका प्रभाव उसके सम्पूर्ण जीवन में विद्यमान रहता है। शहरी एवं ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में संयुक्त परिवार प्रथा के धीरे–धीरे समाप्त होने और न्यूक्लियर फैमिली के आगमन के साथ ही बालक के मूल्य प्रशिक्षण, प्राप्ति और उनके समुचित प्रयोग के अवसरों में कमी आई है।

सन् 1990 का दशक कम्प्यूटर, इंटरनेट आदि के माध्यम से संचार क्रांति का युग था। संचार क्रांति ने ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों को प्रभावित किया। नगरीय क्षेत्रों में आधारभूत संरचना के विकास, बिजली उपलब्धता, आदि के कारण संचार साधनों ने नगरीय क्षेत्रों को अधिक प्रोत्साहित किया है।साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की कमी, जागरूकता का अभाव, निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर ने संचार क्रांति के प्रभावों की भिन्नता को जन्म दिया। क्या इन भिन्नताओं ने ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मूल्यों को भी भिन्न–भिन्न रूप से प्रभावित किया है? इसका अध्ययन किया जाना आवश्यक है। ताकि विसंगतियों को प्रकाश में लाया जाये और उन्हें दूर करने के प्रयास किये जायें।

उद्देश्य–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन।

चर– प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित चर लिये गये है।

चर – (प) आयु (पप) कक्षा

परिकल्पना :

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों के कला/गणित/जीव विज्ञान/वाणिज्य विषय समूह के छात्र/छात्राओं/विद्यार्थियों की

सारणी क्रमांक 01

छात्र–छात्राओं के रहवास संबंधी प्रतिदर्श

उच्च माध्यमिक स्कूल	छात्र	छात्राएँ	योग
ग्रामीण	200	200	400
शहरी	200	200	400
योग	400	400	800

स्वतंत्र चर – (प) ग्रामीण उच्च माध्यमिक स्कूल छात्र/छात्राएँ

(पप) शहरी उच्च माध्यमिक स्कूल छात्र/छात्राएँ

परतंत्र चर – मूल्यनियंत्रण

संवेगात्मक बुद्धि में अंतर नहीं होता है।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध कार्य में ग्रामीण एवं शहरी उच्च माध्यमिक स्कूल के कला, गणित, जीव विज्ञान, वाणिज्य संकाय के छात्र–छात्राओं का न्यादर्श चयन निम्नानुसार किया गया –

ग्राफ संख्या 1 : छात्र–छात्राओं के रहवास संबंधी प्रतिदर्श

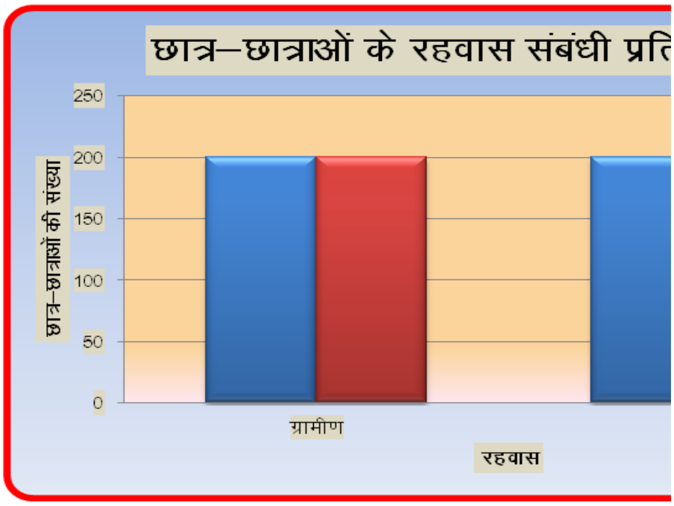

सारणी क्रमांक 02
छात्र–छात्राओं के विषय संकाय आधारित प्रतिदर्श

उच्च माध्यमिक स्कूल	विषय	छात्र	छात्राएँ	योग
ग्रामीण	कला	50	50	100
	गणित	50	50	100
	जीव विज्ञान	50	50	100
	वाणिज्य	50	50	100
शहरी	कला	50	50	100
	गणित	50	50	100
	जीव विज्ञान	50	50	100
	वाणिज्य	50	50	100
कुल		400	400	800

ग्राफ संख्या 2 : छात्र–छात्राओं के विषय संकाय आधारित प्रतिदर्श

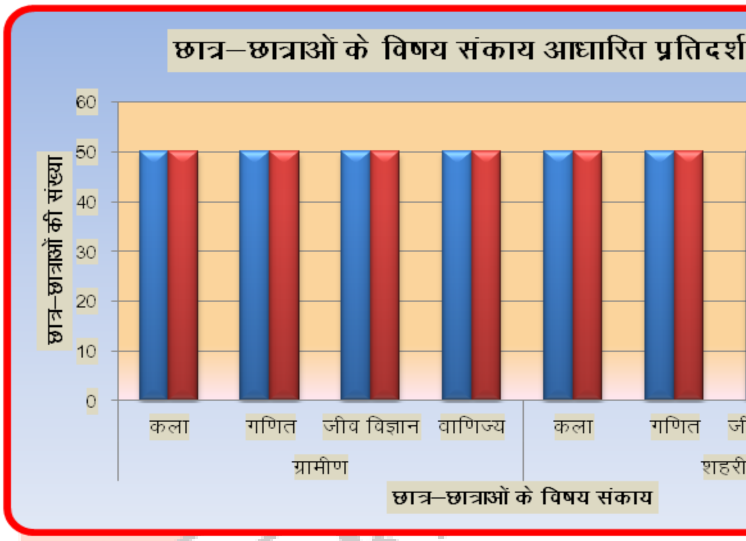

प्रयुक्त उपकरण–

मूल्य अध्ययन मापनी:– डॉ. आर. के. ओझा

सांख्यिकीय विधियां– प्राप्त प्राप्तांकों के विश्लेषण के लिये निम्नलिखित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया है– (1) मध्यमान (2) मानक विचलन (3) क्रांतिक अनुपात

परिणामों का विश्लेषण–

सारणी क्रमांक 03
ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्य संबंधी तुलनात्मक परिणाम

मूल्य	स्थान की प्रकृति	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान की त्रुटि	क्रांतिक अनुपात	'पी'–मान
सैद्धांतिक	ग्रामीण	400	44ण्00	6ण्29	0ण्31	1ण्50	झ 0ण्05
	शहरी	400	44ण्71	7ण्07	0ण्35		
आर्थिक	ग्रामीण	400	40ण्05	6ण्38	0ण्31	0ण्61	झ 0ण्05
	शहरी	400	39ण्78	6ण्04	0ण्30		
सौंदर्यात्मक	ग्रामीण	400	32ण्50	8ण्22	0ण्41	3ण्17	ढ 0ण्01
	शहर	400	34ण्23	7ण्44	0ण्37		

	री						
सामाजिक	ग्रामीण	400	41ण78	6ण88	0ण34	4ण82	ढ 0ण01
	शहरी	400	39ण44	6ण87	0ण34		
राजनैतिक	ग्रामीण	400	44ण10	6ण85	0ण34	10ण20	ढ 0ण01
	शह	400	39ण6	5ण9	0ण29		

स्वतंत्रता के अंश –798 0.05 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान –1.96

	री		1	8	9		
धार्मिक	ग्रामीण	400	40ण06	6ण29	0ण31	1ण56	झ 0ण05
	शहरी	400	39ण37	6ण22	0ण31		

0.01 स्तर पर सार्थकता हेतु तालिका मान –2.58

ग्राफ संख्या 3 : ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक मूल्य संबंधी तुलनात्मक परिणाम

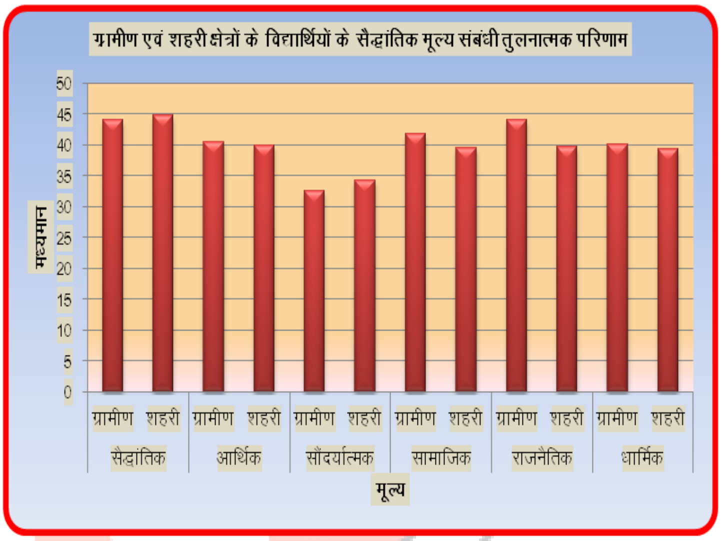

उपरोक्त सारणी में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के विभिन्न मूल्यों के तुलनात्मक परिणाम प्रदर्शित किये गये हैं। इन परिणामों से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं राजनैतिक मूल्यों सांख्यिकी दृष्टिकोण से सार्थक अंतर पाया गया है क्योंकि इनके प्राप्त क्रांतिक अनुपात के मान क्रमशः 3.17, 4.82 एवं 10.20 प्राप्त हुए हैं, जो 0.01 सार्थकता के लिये न्यूनतम सारणी मान की अपेक्षा अधिक हैं। किंतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्य में कोई अंतर नहीं पाया गया है।

उपरोक्त परिणामों के आधार पर निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि रहवास की प्रकृति अर्थात शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र का विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर प्रभाव पड़ता है किंतु सैद्धांतिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों पर रहवास की प्रकृति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

उपरोक्त तालिका के अवलोकन से ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों के आर्थिक मूल्यों पर रहवास की प्रकृति का कोई सार्थक प्रभाव नहीं

पाया गया है। शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों में सौंदर्यात्मक एवं राजनैतिक मूल्य ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाये गये हैं ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्य शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक है। विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों पर रहवास का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है। **केनीथ एम. टेलर, बॉयकिन ए. वाडे, ओरोंडे मिलर एवं एरिक हर्ले (2006)** ने निम्न आर्थिक स्तर के अफ्रीकन–अमेरिकन विद्यार्थियों के सांस्कृतिक मूल्यों पर विद्यालय एवं घर के अनुभव के प्रभाव संबंधी अध्ययन में पाया कि वातावरण का विद्यार्थियों के मूल्यों व संबंधित क्रियाओं पर प्रभाव पड़ता है।

मूल्यों के मुख्य स्त्रोतो में धर्म, संस्कृति, दर्शन, साहित्य, विज्ञान, संविधान, सामाजिक प्रथाएं, इतिहास व जन प्रसारण के साधन शामिल हैं। इन स्त्रोतों को जितना अधिक सशक्त किया जायेगा ये विद्यार्थियों पर अपना उतना अधिक सकारात्मक प्रभाव डालेंगे।

विज्ञान की प्रगति, मीडिया और जनसंचार माध्यमों की पर्याप्त पहुँच ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में है। फिर भी ग्रामीण क्षेत्र में अवसंरचना विकास में कमियाँ हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्र में इन संसाधनों कीउपलब्धता एवं उपयोग में अवरोध उत्पन्न होता है। मीडिया के सकारात्मक प्रभावों के साथ ही नकारात्मक प्रभाव भी है। शिक्षक का व्यक्तित्व और उच्च माध्यमिक स्कूल सुख–सुविधाओं के वातावरण की उपलब्धता व अनुपलब्धता मूल्य विकास को प्रभावित करते हैं। यही कारण है कि अध्ययन परिणामों में शहरी छात्रों के सैद्धांतिक मूल्य ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा अधिक पाये गये।

ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र आर्थिक मूल्यों से समान रूप से प्रभावित होते हैं। ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में दैनिक आवश्यकताओं की संतुष्टि हेतु आजीविका उपार्जन को समान महत्व दिया जाता है। जब तक मनुष्य की आधारभूत आवश्यकताएं जैसे – भूख, प्यास, नींद आदि की तृप्ति नहीं हो जाती वह उच्च आवश्यकता प्रतिमान को निर्धारित नहीं कर सकता हैं। **मैस्लों** ने भी अपने आवश्यकता पदानुक्रम मॉडल में इसे स्वीकार किया है। यही कारण है कि आर्थिक मूल्यों पर रहवास का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया है। **सपना हैनरी एवं मुक्ति मिश्रा (2005)** ने अनुसूचित जनजाति एवं सामान्य छात्राओं के मूल्यों का अध्ययन किया। अनुसूचित जनजाति क्षेत्रों में गरीबी होती है इसलिये इन छात्राओं में आर्थिक मूल्य अधिक पाये गये। अनुसूचित जनजाति के लोग अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में रहते है जहाँ आजीविका के साधन कम और गरीबी अधिक होती है।

शहरी क्षेत्रों में विलासिता एवं उपभोगवादी संस्कृति को ज्यादा प्रोत्साहन मिल रहा है ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा। पाश्चात्य संस्कृति के प्रति झुकाव ज्यादा देखने को मिल रहा है। सांस्कृतिक प्रदूषण एवं संस्कारों को रूढ़ियाँ समझने की प्रवृत्ति विद्यार्थियों को जीवन मूल्यों से भटका रही है। शहरी क्षेत्रों में मीडिया एवं फैशन का प्रचलन अपेक्षाकृत अधिक है। ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा शहरों में

साक्षरता प्रतिशत अधिक है जिससे अधिकारों, कर्त्तव्यों के प्रति जागरूकता और समसामायिक सामाजिक व राजनैतिक परिवेश की जानकारी शहरी विद्यार्थियों को तुलतनात्मक रूप से अधिक रहती है। इन्हीं कारणों से शहरी छात्राओं एवं विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक एवं राजनैतिक मूल्य ग्रामीण छात्राओं एवं विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाये गये हैं। **पी.एस.राठौर, ओ.पी. भादण्ड एवं ओ.पी. शर्मा (2005)** ने विश्वविद्यालयीन शिक्षकों के वैयक्तिक मूल्यों का अध्ययन कर बताया की पुरूष शिक्षकों में ज्ञानात्मक मूल्य अधिक थे जबकि शिक्षिकाओं में सौंदर्यात्मक मूल्य अधिक थे। **मेहता (1973)** के अध्ययन परिणाम भी प्रस्तुत शोध परिणाम के अनुरूप हैं जिसमें महिला शिक्षक व विद्यार्थियों ने सौदर्यात्मक मूल्यों पर उच्च प्राप्तांक प्राप्त किये।

निष्कर्ष–

1. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विभिन्न संकाय के उच्च माध्यमिक स्कूल विद्यार्थियों के सौंदर्यात्मक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों में अंतर पाया गया है ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों में सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य शहरी विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक पाया गया है। जबकि सौंदर्यात्मक मूल्य शहरी क्षेत्र केविद्यार्थियों में अधिक पाया गया है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के सैद्धांतिक, आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

- आलपोर्ट, डब्ल्यु गार्डन (1937). *व्यक्तित्व एक मनोवैज्ञानिक व्याख्या,* हाबर्ड यूनिवर्सिटी, पृ.सं. 221।
- अस्थाना, डॉ. मधु एवं वर्मा, डॉ. किरण बाला (2003). *व्यक्तित्व मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास,* नई दिल्ली, पृ. सं.–86–87
- अस्थाना, डॉ. बिपिन, श्रीवास्तव, डॉ. विजया एवं अस्थाना कु. निधि (2008). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,* आगरा : अग्रवाल पब्लिकेशन, पृ.सं. 183
- भार्गव, महेश एवं द्वारका सिंह लाल (1988). *मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकीय के मूल आधार,* आगरा : कचहरी घाट, पृ.सं. 68–93
- गैरेट, हेनरी ई. एवं वुडवर्थ आर. एस. (2007), *शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी,* नई दिल्ली : कल्याणी पब्लिशर्स, पृ.सं.317
- कपिल, डॉ. एच. के. (2005). *सांख्यिकीय के मूल तत्व,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2 पृ.सं. 87–141।

- कुप्पुस्वामी, बी. (1990). *बाल व्यवहार और विकास,* दिल्ली : कोणार्क पब्लिशर्स, पृ.सं. 133
- मंगल, डॉ. एस. के. एवं मंगल शुभ्रा (2008), *शैक्षिक मनोविज्ञान एवं मापन,* नवीन संस्करण, मेरठ : लॉयल बुक डिपो, पृ.सं. 57–59
- माथुर, डॉ. एस. एस. (2007). शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं. 93–95
- मिश्रा, डॉ. महेन्द्र कुमार (2009). *शैक्षिक मनोविज्ञान,* नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, प्रथम संस्करण, पृ.सं. 226
- पचौरी, डॉ. गिरीश (2006). *शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधार,* नवीन संस्करण, मेरठ : आर.लाल. बुक डिपो, पृ. सं.–57
- पाठक, वी.डी. (1996). *शिक्षा के मनोविज्ञान,* तीसवां संस्करण, आगरा : विनोद पुस्तक मंदिर, पृ.सं. 67–75
- राय, पारसनाथ (2006*). अनुसंधान परिचय,* द्वादशम संस्करण, आगरा : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृ.सं. 115–116
- शर्मा, वीरेन्द्र प्रकाश (2004). *रिसर्च मेथडॉलाजी,* तृतीय संस्करण, जबलपुर : पंचशील प्रकाशन पृ.सं. 166